CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286
शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received 11.02.2023 Reviewed 17.02.2023 Accepted 29.03.2023

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

* विजय लक्ष्मी शर्मा
** डॉ. अर्चना मेहन्दीरत्ता

मुख्य शब्द - *व्यावसायिक शिक्षा, आकांक्षा स्तर, सामाजिक वातावरण आदि.*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन किया एवं सर्वेक्षण विधि के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया। परिणाम में यह पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में लैंगिक विभिन्नता के संदर्भ में तथा विद्यालय के प्रकार के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यवस्था किसी भी समाज के विकास की धुरी होती है। विद्यालय शिक्षा से उच्च शिक्षा तक यह व्यवस्था जैसी होगी समाज में ज्ञान, नैतिकता तथा चरित्र का प्रवाह भी उसी तरह परिलक्षित होगा। शिक्षा सीखने और सिखाने की औपचारिक–अनौपचारिक व्यवस्था है। वस्तुतः शिक्षा एक व्यापक एवं बहुआयामी अर्थ वाला शब्द है और सीखने की प्रक्रिया ही इसका मूलाधार है। शिक्षा व्यक्ति के विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा की सहायता से व्यक्ति में ज्ञान, कला–कौशल एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है जिसके द्वारा उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। मानव में सीखने की प्रक्रिया जन्म से मृत्यु पर्यन्त अनवरत चलती रहती है। उदाहरण स्वरूप– शिशु अपनी माँ तथा पालन–पोषण करने वाले अन्य व्यक्तियों के उन व्यवहारों, जिन्हें वह स्वयं देखता–सुनता है, से बहुत कुछ सीखता है। शिक्षा स्वतः परिचालित वह सहज प्रक्रिया है जो केवल औपचारिकताओं से भरे विद्यालय में ही घटित नहीं होती बल्कि इस प्रक्रिया में बालक, परिवार, आस–पड़ोस, समाज सभी का योगदान रहता है। बालक यदि विद्यालय से समयबद्धता, नियमितता, नेतृत्व, अनुशासन, विशिष्ट ज्ञान, कौशलों एवं दक्षताओं को औपचारिक रूप से ग्रहण करता है तो वहीं घर, परिवार, पड़ोस व समाज से वह खान–पान, रहन–सहन, सद्विचार, दृष्टिकोण व आदतों को अनौपचारिक रूप से भी सीखता है। जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव उसके विद्यालयी अधिगम, उपलब्धि एवं व्यक्तित्व पर पड़ता है ।

इक्कीसवी शताब्दी को विज्ञान तथा उद्योग का युग कहा जा सकता है। विज्ञान और उद्योग के इस युग में मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष व्यवसाय है। आजीविका का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि जीवन की प्रत्येक सुविधा को प्राप्त करने के लिए और समाज में व्यक्ति को भली भांति जीवन व्यतीत करने के लिए धन की आवश्यकता होती है, और इस धन को अर्जित करने के लिए अनेक साधन है। व्यवसाय जीवन निर्वाह का मुख्य साधन है। जीविका विहीन जीवन की कल्पना ही नही की जा सकती है। वैदिक युग में शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन नहीं माना गया है। जो शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन मानते थे,

ऐसे लोग निन्दा के पात्र होते थे। किन्तु बिना भोजन के भी काम नहीं चल सकता। इसलिए हम जहाँ शिक्षा का अर्थ अन्तःज्योति से लगाते है वही शिक्षा का उद्देश्य यह भी होना चाहिये कि हम आत्मनिर्भर रह कर योग्य नागरिक बन सकें।

आकांक्षा

आकांक्षा मानव जीवन की एक स्वाभाविक घटना है। किसी भी प्रकार के लक्ष्य या मूल्य को आदि को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है तथा इनके प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता या स्तर आकांक्षा–स्तर कहलाता है। आकांक्षा–स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है जिसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रयासरत होता है। यह व्यक्तिगत प्रेरणा है जिसे व्यक्ति सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अनुभवों के आधार पर अर्जित करता है। प्रत्येक व्यक्ति जो विकास की ओर अग्रसर होता है, अपने भविश्य के लिए आकांक्षाएं निश्चित करता है, तत्पश्चात् उसकी प्राप्ति के लिए वह प्रयत्नशील हो जाता है।

हम प्रतिदिन के जीवन में देखते है कि कुछ व्यक्ति जितनी क्षमता रखते है उससे भी कहीं अधिक कार्य करने की इच्छा प्रकट करते हैं। इस तरह से समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जो अपनी क्षमता से भी कम कार्य करने की इच्छा प्रकट करते है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की मात्रा तथा उस कार्य के प्रति सो चने की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होती है और यही आकांक्षा स्तर के लक्ष्य को निर्धारित करती है। आकांक्षा स्तर उस सीमा को निर्धारित करती है जिस सीमा तक एक व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। जब कोई व्यक्ति एक कार्य कर रहा होता है तो वह अपने लिये एक नया स्तर बना लेता है। जिसे वह पाना चाहता है। इसे ही हम आकांक्षा स्तर कहते है। यदि व्यक्ति सफलता प्राप्त कर लेता है तो यह स्तर ऊँचा हो जाता है। परन्तु असफल होने पर व्यक्ति का स्तर नीचे रह जाता है

आकांक्षा व्यक्ति के लक्ष्य को निर्धारित करती है। यदि व्यक्ति का लक्ष्य उच्च होता है तो उसकी आकांक्षा भी उच्च होगी जिससे कि वह अधिक प्रेरित होकर कार्य कर सके।

'आकांक्षा' शब्द उस विशेष ऊँची इच्छा से तात्पर्य रखता है; जो किसी भी व्यक्ति को एक निश्चित सीमा तक लक्ष्य निर्धारण करने व उसके अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह एक आन्तरिक, व्यक्तिगत, सामाजिक प्रेरक है।

विश्व में शायद ही कोई ऐसा होगा, जिसके अन्तकरण में आकांक्षाएँ न विकसित हो रही हो। हमारी सभी हार्दिक इच्छाएँ, आत्मिक आकांक्षाएँ मात्र कल्पना की कोरी उड़ाने ही नहीं है, न कोरे दिव्यस्वप्न है, वे उन पदार्थो की भविष्यवाणियां है, जो पदार्थ हकीकत में मिलने वाले है। हमारी लालसाएं तथा आकांक्षाएँ हमारी सामर्थ्य के संकेत चिन्ह है। उनसे हमारे लक्ष्य की ऊंचाई नापी जाती है, हमारी कार्य कुशलता की सीमा–रेखा बनायी जाती है।

आकांक्षा के भिन्न–भिन्न स्वरूप हो सकते हैं। यथा–शैक्षिक आकांक्षा, व्यक्तिगत आकांक्षा, सामाजिक आकांक्षा और व्यावसायिक आकांक्षा आदि। आकांक्षा कुछ भी हो वह व्यक्ति को अपनी पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बनाए रखती है। आकांक्षा के स्तर के अनुसार ही व्यक्ति के आचार–विचार बन जाते हैं, वह उसके व्यवहार व आचरण को संचालित व निर्देशित करती रहती है। आकांक्षा के स्तर में भी बराबर परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार का परिवर्तन दो बातों पर निर्भर करता है। पहली व्यक्ति की योग्यता या सामर्थ्य तथा दूसरी व्यक्ति की सफलता या असफलता। साधारणतः व्यक्ति अपनी आकांक्षा का स्तर अपने सामर्थ्य और सफलता–असफलता के अनुपात में ही रखता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- सिंह, अमित कुमार (2021) ने इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव लिंग व जातीय वर्ग के संदर्भ में अध्ययन करना था। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों के केवल 120 विद्यार्थी सम्मिलित हैं जिसमें 60 छात्रों तथा 60 छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव लिंग व जातीय वर्ग के संदर्भ में सार्थक अंतर नहीं है।

- शंकर, रवि. (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। इस शोध का उद्धेश्य पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालयी स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिकीकृत विधि से किया गया है। आँकड़ों की प्राप्ति के लिए प्रमापीकृत परीक्षण व्यावसायिक आकांक्षा प्रश्नावली डा. जे. एम. ग्रेवाल (1998) का प्रयोग किया है। अध्ययन में पाया गया कि पारिवारिक संरचना का विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षाओं पर प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि सामाजिक परिवेश और विद्यालय स्वरूप का विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शहरी परिवेश के विद्यार्थियों व्यावासयिक आकांक्षा ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी जाती है। इसी प्रकार पब्लिक स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा सरकारी स्कूल में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी है।
- यादव, मुरारी (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन किया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए डा. सरिता आनन्द द्वारा निर्मित उपकरण व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग एवं विषय वर्ग का प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है एवं कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है।
- वर्मा, लक्ष्मी. (2016) ने उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्धेश्य उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के न्यादर्श हेतु 957 किशोरों का चयन किया हैं। चरों के मापन के लिए डॉ. ग्रेवाल द्वारा र्निमित व्यवसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग करते हुए ऑकडों का संग्रहण किया। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला गया कि वे किशोर जिनका व्यावसायिक आंकांक्षा स्तर अधिक है उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न व्यावसायिक आंकांक्षा स्तर वाले छात्रों की तुलना में अधिक है।

अध्ययन का औचित्य

बदलते विश्व परिदृश्य के परिणामस्वरूप व्यावसायिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। नित्य नये व्यावसायिक क्षेत्रों का प्रादुर्भाव हो रहा है। कार्य जगत में बढते नये–नये क्षेत्र परिणाम हैं, हमारी बदलती आवश्यकताओं व मांग के, जिसने हमारी अभिवृति व विचारों को भी बदल कर रख दिया। आज यहाँ विद्यार्थी विद्यालय स्तर से अपने व्यवसाय के प्रति गंभीर हैं, वहीं कार्य जगत में भी प्रशिक्षित एवं योग्य युवाओं की मांग बढ गयी है, जिससे वे तेजी से बदलते विश्व में अपने अस्तित्व को कायम कर सकें। किन्तु वर्तमान समय में किसी भी व्यवसाय का चुनाव व्यक्ति की पसन्द, नापसन्द या परिवार की प्रारम्भिक जीविका से ही सम्बन्धित या सीमित नहीं रह गया है। बल्कि अनेकों प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कारक इसे प्रभावित करते है जैसे बालक का सामाजिक–आर्थिक स्तर, उसके माता–पिता की शिक्षा का स्तर, सामाजिक परिवेश व वातावरण, उसकी स्वयं की आकांक्षा, प्राप्त व उपलब्ध व्यावसायिक सूचनायें आदि। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

2 सरकारी एवं निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के लिए जयुपर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण एवं सांख्यिकी तकनीक

आंकडों का संकलन करने के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया तथा विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण के द्वारा किया गया है।

प्रदत विश्लेषण

परिकल्पना 1 – उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका : 1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	परिणाम
छात्र	100	135.39	23.06	0.27	0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
छात्राएँ	100	136.26	22.71		

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का मध्यमान 135.39 तथा प्रमाप विचलन 23.06 है। उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का मध्यमान 136.26 तथा प्रमाप विचलन 22.71 है। प्राप्त मध्यमानों और प्रमाप विचलन से टी परीक्षण की गणना करने पर टी परीक्षण का मूल्य 0.27 प्राप्त हुआ। जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका के मूल्य से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना 2 – सरकारी एवं निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका : 2 सरकारी एवं निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में अंतर

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	परिणाम
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	100	131.62	21.40	0.41	0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत
निजी विद्यालय की विद्यार्थी	100	132.83	19.84		

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का मध्यमान 131.62 तथा प्रमाप विचलन 21.40 है। दूसरी ओर निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का मध्यमान 132.83 तथा प्रमाप विचलन 19.84 है। प्राप्त मध्यमानों और प्रमाप विचलन से टी परीक्षण की गणना करने पर टी परीक्षण का मूल्य 0.41 प्राप्त हुआ। जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका के मूल्य से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में अंतर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षा हेतु आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव में लैंगिक विभिन्नता के संदर्भ में तथा विद्यालय के प्रकार के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1963). *रिसर्च इन एजूकेशन.* नई दिल्ली : प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1958). *रिसर्च इन एजूकेशन.* प्रेक्टिस हॉल (इंक)यू एस ए : ऐंगिल बुक क्लिफस.
- भार्गव, महेश. (2006). *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन.* कचहरी घाट आगराः पुस्तक प्रकाशन.
- गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009). *शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श.* आगराः राखी प्रकाशन.
- करलिंगर, एफ.एन. (1967). *फाउण्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च.* न्यूयार्क : हालट रेनहार्ट एण्ड विन्सटर
- कप्लान, आर एम. (1987). *बेसिक स्टेटिस्टिक फॉर दि बिहेवियरल साइन्स.* लन्दन : एलन एण्ड बेकन प्रिन्टर्स
- कपिल, एच. के.(1995). *अनुसंधान विधियाँ.* मेरठः भार्गव भवन
- पाठक, आर.पी. व भारद्वाज, अमिता पाण्डेय. (2012). *शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स.
- शंकर, रवि. (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवेश व विद्यालय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. रिव्यू ऑफ रिसर्च, 7(9), 1–5.
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2007) *अनुसंधान विधियाँ,* आगराः साहित्य प्रकाशन.
- सिंह, अमित कुमार (2021). इण्टरमीडिएट स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलोजी एण्ड इनोवेटिव रिसर्चए 8(10), 553–562.

- सिंह, चन्द्र और शर्मा, हनुमान सहाय (2020). शैक्षिक समायोजन, पर निर्देशन एवं परामर्श के प्रभाव का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, 6(6), 1–2.
- वर्मा, लक्ष्मी. (2016). उच्च एवं निम्न व्यावसायिक आकांक्षा का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्यय, जर्नल ऑफ रविशंकर यूनिवर्सिटी, (22),121–124.
- यादव, मुरारी (2018). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन. रिमार्किंग एण्ड एनालाइजेशन, 3(7), 156–159.

Corresponding Author

*** विजय लक्ष्मी शर्मा** *(शोधार्थी)*

****डॉ. अर्चना मेहन्दीरत्ता** *(शोध निर्देशिका)*

शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

Email-vijai.neena@gmail.com, Mobile - 9694098772